श्रीहित हरिवंश महाप्रभु कृत

श्री हित यमुनाष्टक

बृजाधिराज – नन्दनाम्बुदाम गात्र

चन्दना नुलेप गन्ध वाहिनीं

भवाब्धि बीजदाहिनीम् |

जगत्रये यशस्विनी लसत्सुधा पयस्विनी

भजे कलिन्द नन्दिनीं दुरन्त मोह भंजिनीम

||१||

रसैक सीम राधिका पदाब्ज- भक्ति – साधिकां
तदन्ग – राग -पिंजर , प्रभाति पुंज मंजुलाम|
स्वरोचषाति शोभितां कृतां जनाधि गंजनां
भजे कलिन्द नन्दिनीं दुरन्त मोह भंजिनीम
|| २ ||

बृजेन्द्र – सूनु – राधिका हृदि प्रपुर्यमाणयो
महा रसाब्धि पूरयोरिवाति तीव्र वेगतः |
बहिः समुच्छलन्नव प्रवाह – रूपिणीमहं भजे
कलिन्द नन्दिनीं दुरन्त मोहभंजिनीम
|| ३ ||

विचित्र रत्नबद्ध सत्तटद्वयश्रियोज्ज्वलां विचित्र हंस सारसाधनन्त पक्षि संकुलाम् |
विचित्र मीण – मेखलां कृताति दीन – पालितां , भजे कलिन्द नन्दिनीं दुरन्त मोह भंजिनीम
|| ४ ||

वहन्तिकां श्रियां हरे मुँदा कृपा स्वरुपिणीं विशुद्ध

भक्ति मुज्ज्वला परे रसात्मिकां विदुः |

सुधा श्रुतित्व लौकिकीं परेश वर्ण रुपिणी भजे

कलिन्द नन्दिनीं दुरन्त मोह भंजिनीम

|| ५ ||

सुरेन्द्र वृन्द वन्दिता रसादधिष्ठिते वने सदोपलब्ध

माधवाद्भुतैकसुद्रसोन्मदाम् ।

अतीव विह्वलामिवचलत्तरङ्ग दोलतां भजे कलिन्द

नन्दिनीं दुरन्त मोह भंजिनीम

॥ ६ ॥

प्रफल्ल पङ्कजाननां लसन्नवोत्पलेक्षणां
रथाङ्गनां युग्मकस्तनीमुदार हंसिकाम् ।
नितम्बचारु रोधसां हरेः प्रिया रसोज्वलां भजे
कलिन्द नन्दिनीं दुरन्त मोह भंजिनीम
॥ ७ ॥

समस्त वेद मस्तकैरगम्य वैभवां सदा महा मुनीन्द्र

नारदादिभिः सदैव भाविताम् |

अतुल्य पामरै रपिश्रितां पुमथें शारदां भजे कलिन्द

नन्दिनीं दुरन्त मोह भंजिनीम

||८||

य एतदष्टकं बुधस्त्रिकाल माद्दृतः पठेत कलिन्द

नन्दिनी ह्लदा विचिन्त्य विश्व वन्दिताम् |

इहैव राधिकापतेः पदाब्ज भक्ति मुत्तमाम् मवाप्य स

ध्रुवं भवेत्परत्र तत्प्रियानुगः

||९||

|| इति श्री यमुनाष्टक- श्री हित हरिवंशमहाप्रभु कृत ||